''मीठे बच्चे – शिवबाबा के इस रचे हुए रुद्र यज्ञ की तुम्हें बहुत-बहुत सम्भाल करनी है, यह है बेहद का यज्ञ स्वराज्य पाने के लिए''

प्रश्नः- इस रुद्र यज्ञ का रिस्पेक्ट किन बच्चों को रहता है?

उत्तरः- जो इसकी विशेषताओं को जानते हैं। तुम्हें पता है कि इस रुद्र यज्ञ से हम कौड़ी से हीरे जैसा बनते हैं, इसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होती है, इस पुराने शरीर को भी स्वाहा करना है। कोई भी ऐसा बेकायदे कर्म न हो, जिससे यज्ञ में विघ्न पड़े। जब ऐसा ध्यान रहे तभी रिस्पेक्ट रख सकते हैं।

गीतः- माता ओ माता...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) अपने इस रुद्र यज्ञ का बहुत-बहुत रिस्पेक्ट रखना है। यज्ञ का वातावरण बहुत शुद्ध पावरफुल बनाने में सहयोगी बनना है। इसकी प्यार से सम्भाल करनी है।

2) अपने पास कुछ भी छिपाकर नहीं रखना है। दिल साफ तो मुराद हासिल। इस यज्ञ की कौड़ी-कौड़ी अमूल्य है इसलिए एक कौड़ी भी व्यर्थ नहीं गँवानी है। इसकी वृद्धि में सहयोग देना है।

वरदानः- तीनों कालों को सामने रख हर कार्य में सफल होने वाले सदा विजयी भव

लौकिक रीति में भी जो समझदार होते हैं वह आगे पीछे सोच-समझकर फिर कदम उठाते हैं। ऐसे यहाँ भी आप बच्चे जब कोई कार्य करते हो तो पहले तीनों कालों को सामने रखकर फिर करो, सिर्फ वर्तमान को नहीं देखो, बेहद की समझ धारण करो और विजयीपन के निश्चय के आधार पर वा त्रिकालदर्शीपन के आधार पर हर कर्म करो वा हर बोल बोलो तब कहेंगे अलौकिक वा असाधारण।

स्लोगनः- हद के किनारों को छोड़ एक बाप को सहारा बना लो तो पार हो जायेंगे।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मज़बूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

कई बच्चे समझते हैं मैं स्वयं को जानता हूँ कि मैं ठीक हूँ, दूसरे नहीं जानते व दूसरे नहीं पहचानते, आखिर पहचान ही लेंगे व आगे चलकर देखना क्या होता है! यह भी ज्ञान स्वरूप, याद स्वरूप आत्मा के लिए स्वयं को धोखा देनेवाली अलबेलेपन की मीठी निद्रा है। जिन बच्चों के निश्चय का फाउण्डेशन मजबूत है वह कभी छिप नहीं सकते। वे सदा निर्भय और निश्चिंत रहते हैं।

''मीठे बच्चे – ऊंच पद पाना है तो सच्चे बाप के साथ सदा सच्चे रहो, कोई भी भूल हो तो बाप से क्षमा ले लो, अपनी मत पर नहीं चलौ''

प्रश्नः- कौन-से लाल कभी छिप नहीं सकते हैं?

उत्तरः- जिनका ईश्वरीय परिवार से प्यार है, जिन्हें रात-दिन सर्विस का ही ओना रहता है, ऐसे सर्विसएबुल जो फरमानबरदार और वफादार हैं, कभी भी मनमत पर नहीं चलते हैं, बाप से सच्चे और साफ दिल हैं वह कभी भी छिप नहीं सकते हैं।

गीतः- तुम्हीं हो माता पिता...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सच्चाई से बाप की सर्विस में लग जाना है। पूरा वफादार, फरमानबरदार बनना है। ईश्वरीय परिवार से सच्चा लव रखना है।

2) श्रीमत में मनमत वा रावण की मत मिक्स नहीं करनी है। एक बाप दूसरा न कोई इस गैरन्टी में पक्का रहना है। हृदय को शुद्ध पवित्र बनाना है।

वरदानः- रुहानियत की खुशबू के आधार पर सर्व को परमात्म सन्देश देने वाले विश्व कल्याणकारी भव

रुहानियत की सर्वशक्तियाँ स्वयं में धारण कर लो तो रुहानियत की खुशबू सहज ही अनेक आत्माओं को अपने तरफ आकर्षित करेगी। जैसे मन्सा शक्ति से प्रकृति को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हो वैसे अन्य विश्व की आत्मायें जो आप लोगों के आगे नहीं आ सकेंगी उनको दूर रहते हुए भी आप रुहानियत की शक्ति से बाप का परिचय वा मुख्य सन्देश दे सकेंगे। यह सूक्ष्म मशीनरी जब तेज करो तब अनेक तड़फती हुई आत्माओं को अंचली मिलेगी और आप विश्व कल्याणकारी कहलायेंगे।

स्लोगनः- अपने पास शुद्ध वा श्रेष्ठ संकल्प इमर्ज रखो तो व्यर्थ स्वतः मर्ज हो जायेंगे।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मज़बूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

जिस समय कोई भी परिस्थिति आये तो बाप को साथी बना लो तो अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं हूँ, मेरे साथ विशेष शक्ति है। जहाँ बाप है वहाँ चाहे कितने भी तूफान हों, वह तोफा बन जायेंगे। निश्चय बुद्धि विजयन्ति – इस टाइटिल की स्मृति से विजयी बनो और विजयी वर्ष मनाओ।

''मीठे बच्चे – बाप जो है, जैसा है, तुम बच्चों में भी नम्बरवार पहचानते हैं, अगर सब पहचान लें तो बहुत भीड़ मच जाये''

प्रश्नः- चारों ओर प्रत्यक्षता का आवाज़ कब फैलेगा?

उत्तरः- जब मनुष्यों को पता पड़ेगा कि स्वयं भगवान इस पुरानी दुनिया का विनाश कराके नई दुनिया स्थापन करने आये हैं। 2- हम सबकी सद्गति करने वाला बाप हमें भक्ति का फल देने आया है। यह निश्चय हो तो प्रत्यक्षता हो जाए। चारों ओर हलचल मच जाए।

गीतः- जो पिया के साथ है...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) तकदीरवान बनने के लिए एक बाप से सच्चा-सच्चा लव रखना है। लव रखना माना कदम-कदम एक की ही श्रीमत पर चलते रहना।

2) रोज़ पुण्य का काम अवश्य करना है। सबसे बड़ा पुण्य है सबको बाप का परिचय देना। बाप को याद करना और सबको बाप की याद दिलाना।

वरदानः- अपनी दृष्टि और वृत्ति के परिवर्तन द्वारा सृष्टि को बदलने वाले साक्षात्कारमूर्त भव

अपनी वृत्ति के परिवर्तन से दृष्टि को दिव्य बनाओ तो दृष्टि द्वारा अनेक आत्मायें अपने यथार्थ रूप, यथार्थ घर तथा यथार्थ राजधानी देखेंगी। ऐसा यथार्थ साक्षात्कार कराने के लिए वृत्ति में ज़रा भी देह-अभिमान की चंचलता न हो। तो वृत्ति के सुधार से दृष्टि दिव्य बनाओ तब यह सृष्टि परिवर्तन होगी। देखनेवाले अनुभव करेंगे कि यह नयन नहीं लेकिन यह एक जादू की डिब्बिया हैं। यह नयन साक्षात्कार के साधन बन जायेंगे।

स्लोगनः- सेवा के उमंग-उत्साह के साथ, बेहद की वैराग्य वृत्ति ही सफलता का आधार है।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

मधुरता के गुण को धारण करने वाला यहाँ भी महान् बनता है और वहाँ भी मर्तबा पाता है। मधुरता वालों को सभी महान रूप से देखते हैं। तो यह मधुरता का विशेष गुण हर बच्चे में होना चाहिए। मधुरता की मधु जिनके साथ है उन्हें हर कार्य में सफलता ही सफलता है। उनके जीवन से असफलता मिट जायेगी।

''मीठे बच्चे – बाप की यह वण्डरफुल हट्टी (दुकान) है, जिस पर सब वैराइटी सामान मिलता है, उस हट्टी के तुम मालिक हो''

प्रश्नः- इस वण्डरफुल दुकानदार की कॉपी कोई भी नहीं कर सकता है – क्यों?

उत्तरः- क्योंकि यह स्वयं ही सर्व खजानों का भण्डार है। ज्ञान का, सुख का, शान्ति का, पवित्रता का, सर्व चीजों का सागर है, जिसको जो चाहिए वह मिल सकता है। निवृत्ति मार्ग वालों के पास यह सामान मिल नहीं सकता। कोई भी अपने को बाप समान सागर कह नहीं सकते।

गीतः- तुम्हें पाके हमने...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) बाप द्वारा जो सुख-शान्ति-पवित्रता का वक्खर मिला है, वह सबको देना है। पहले विकारों का दान दे पवित्र बनना है फिर अविनाशी ज्ञान धन का दान करना है।
2) देवताओं जैसा मीठा बनना है। जो बापदादा से प्रतिज्ञा की है, उसे सदा याद रखना है और बाप की याद में रहकर विकर्म भी विनाश करने हैं।

वरदानः- निमित्तपन की स्मृति द्वारा अपने हर संकल्प पर अटेन्शन रखने वाले निवारण स्वरूप भव

निमित्त बनी हुई आत्माओं पर सभी की नज़र होती है इसलिए निमित्त बनने वालों को विशेष अपने हर संकल्प पर अटेन्शन रखना पड़े। अगर निमित्त बने हुए बच्चे भी कोई कारण सुनाते हैं तो उनको फॉलो करने वाले भी अनेक कारण सुना देते हैं। अगर निमित्त बनने वालों में कोई कमी है तो वह छिप नहीं सकती इसलिए विशेष अपने संकल्प, वाणी और कर्म पर अटेन्शन दे निवारण स्वरूप बनो।

स्लोगनः- ज्ञानी तू आत्मा वह है जिसमें अपने गुण वा विशेषताओं का भी अभिमान न हो।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

मधुरता का गुण जीवन में तब आयेगा जब अपनी वा दूसरे की बीती को न देख अन्दर के संस्कारों को सरल व नम्रचित बनायेंगे। सरलचित आत्मा का गुण है ही मधुरता। उनके नयनों से मधुरता, मुख से मधुरता और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है। मधुरता और नम्रता, इन दो विशेष धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी बन जायेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे।

''मीठे बच्चे – बाप समान रहमदिल बन अनेकों को रास्ता बताओ, जो बच्चे दिन रात सर्विस में लगे रहते हैं – वही बहादुर हैं''

प्रश्नः- ऊंची तकदीर का मुख्य आधार किस बात पर है?

उत्तरः- याद की यात्रा पर। जितना जो याद करता है उतनी ऊंची तकदीर बनाता है। शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते बाप और वर्से को याद करते रहो तो तकदीर ऊंची बनती जायेगी।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) बन्धनमुक्त बन बाप की सर्विस में लग जाना है, तब ही ऊंची तकदीर बनेंगी। रहमदिल बन अनेकों को रास्ता बताना है। अन्धों की लाठी बनना है।

2) इस शरीर से ममत्व निकाल जीते जी मरना है क्योंकि अब वापिस घर जाना है। बीमारी में भी एक बाप की याद रहे तो विकर्म विनाश हो जायेंगे।

वरदानः- कल्याण की भावना द्वारा हर आत्मा के संस्कारों को परिवर्तन करने वाले निश्चयबुद्धि भव

जैसे बाप में 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि हो, कोई कितना भी डगमग करने की कोशिश करे लेकिन हो नहीं सकते, ऐसे दैवी परिवार वा संसारी आत्माओं द्वारा भल कोई कैसा भी पेपर ले, क्रोधी बन सामना करे वा कोई इन्सल्ट कर दे, गाली दे – उसमें भी डगमग हो नहीं सकते, इसमें सिर्फ हर आत्मा प्रति कल्याण की भावना हो, यह भावना उनके संस्कारों को परिवर्तन कर देगी। इसमें सिर्फ अधीर्य नहीं होना है, समय प्रमाण फल अवश्य निकलेगा – यह ड्रामा की नूंध है।

स्लोगनः- पवित्रता की शक्ति से अपने संकल्पों को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप बनाकर कमजोरियों को समाप्त करो।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

वाचा में सदा सत्यता और मधुरता हो तो वाणी की मार्क्स जमा होती रहेंगी। मधुरता का गुण जीवन में है तो हर बोल मोती समान होंगे। ऐसे लगेगा जैसे बोल नहीं रहे हैं, मोतियों की वर्षा हो रही है। वे ऐसा बोल बोलेंगे जो सुननेवाले सोचेंगे कि ऐसा बोल हम भी बोलें। सबको सुनकर सीखने की, फॉलो करने की प्रेरणा मिलेगी। ऐसे मधुर बोल का वायब्रेशन सर्व को स्वत: ही खींचता है।

''मीठे बच्चे – अल्फ और बे को याद करो तो रमणीक बन जायेंगे, बाप भी रमणीक है तो उनके बच्चे भी रमणीक होने चाहिए''

प्रश्नः- देवताओं के चित्रों की कशिश सभी को क्यों होती है? उनमें कौन-सा विशेष गुण है?

उत्तरः- देवतायें बहुत रमणीक और पवित्र हैं। रमणीकता के कारण उनके चित्रों की भी कशिश होती है। देवताओं में पवित्रता का विशेष गुण है, जिस गुण के कारण ही अपवित्र मनुष्य झुकते रहते हैं। रमणीक वही बनते जिनमें सर्व दैवी गुण हैं, जो सदा खुश रहते हैं।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) अभी हम वनवाह में हैं – इसलिए बहुत-बहुत साधारण रहना है। कोई भी अभिमान देह का वा कपड़ों आदि का नहीं रखना है। कोई भी कर्म करते बाप की याद का नशा चढ़ा रहे।

2) हम बेहद के त्यागी और राजऋषि हैं – इसी नशे में रह पवित्र बनना है। ज्ञान धन से भरपूर बन दान करना है। सच्चा-सच्चा सौदागर बन अपना पोतामेल रखना है।

वरदान:- स्वयं को सेवाधारी समझकर झुकने और सर्व को झुकाने वाले निमित्त और नम्रचित भव

निमित्त उसे कहा जाता – जो अपने हर संकल्प वा हर कर्म को बाप के आगे अर्पण कर देता है। निमित्त बनना अर्थात् अर्पण होना और नम्रचित वह है जो झुकता है, जितना संस्कारों में, संकल्पों में झुकेंगे उतना विश्व आपके आगे झुकेगी। झुकना अर्थात् झुकाना। यह संकल्प भी न हो कि दूसरे भी हमारे आगे कुछ तो झुकें। जो सच्चे सेवाधारी होते हैं – वह सदैव झुकते हैं। कभी अपना रोब नहीं दिखाते।

स्लोगन:- अब समस्या स्वरूप नहीं, समाधान स्वरूप बनो।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

आप महान आत्माओं का हर मंसा संकल्प हर आत्मा के प्रति मधुर हो, महान हो। जैसे बाप का स्वभाव सदा हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का है, हर एक को ऊंचा उठाने का, मधुरता और निर्माणता का है। ऐसे अपना स्वभाव बनाओ। अगर तेज़ बोलने का, आवेश में आने का स्वभाव है तो यह भी ब्राह्मण जीवन में बहुत बड़ा विघ्न है। अब ऐसे स्वभाव का परिवर्तन करो।

''स्वराज्य की रिजल्ट चेक करके स्वयं को चेंज करो और अखण्ड राज्य के अधिकारी बनो''

- आज दिलाराम बाप अपने राजदुलारे बच्चों से मिलने आये हैं। आप हर एक बच्चा तीन तख्त के मालिक हो? एक स्वराज्य का तख्त, दूसरा है बापदादा के दिल का तख्त और तीसरा है भविष्य का तख्त।
- इस समय ही अपने राज्य भाग्य के संस्कार धारण कर रहे हो क्योंकि अब का पुरुषार्थ भविष्य के राज्य का अधिकारी बनाता है। जैसे भविष्य में एक राज्य होगा तो अभी चेक करो कि हमारा एक राज्य मन में चलता है?
- आपकी विशेष धारणा सम्पूर्ण पवित्रता। तो चेक करो कि एक धर्म है? और बात – राज्य में सदा सुख और शान्ति नेचुरल रहती है। तो अभी देखो अपने राज्य में सदा सुख शान्ति है? बहुतकाल का यह स्वराज्य का अभ्यास भविष्य राज्य के अधिकारी बनाता है।
- बापदादा सदा के लिए अटेन्शन दिला रहा है, अगर कोई भी विघ्न आता है, तूफान आता है तो तूफान, तूफान नहीं लेकिन तोहफा बन जाये। अभी विशेष हर एक को यह चेक करना है कि इस संगमयुग का एक एक सेकण्ड समय और संकल्प शुभ चलता है?
- बापदादा यही कहते पुरुषार्थ तीव्र करना है। तीव्र पुरुषार्थी आगे बढ़ेंगे, चलना नहीं उड़ना। अन्डरलाइन बहुत समय का पुरुषार्थ हो। चेकिंग करो और चेंज करो।

वरदान:- संगठन में सहयोग की शक्ति द्वारा विजयी बनने वाले सर्व के शुभचिंतक भव

यदि संगठन में हर एक, एक दो के मददगार, शुभचिंतक बनकर रहें तो सहयोग की शक्ति का घेराव बहुत कमाल कर सकता है। आपस में एक दो के शुभचिंतक सहयोगी बनकर रहो तो माया की हिम्मत नहीं जो इस घेराव के अन्दर आ सके। लेकिन संगठन में सहयोग की शक्ति तब आयेगी जब यह दृढ़ संकल्प करेंगे कि चाहे कितनी भी बातें सहन करना पड़े लेकिन सामना करके दिखायेंगे, विजयी बनकर दिखायेंगे।

स्लोगन:- कोई भी इच्छा, अच्छा बनने नहीं देगी, इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या बनो।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

जैसे मीठा खाने और खिलाने से थोड़े समय के लिए मुख मीठा होता है, खुश होते हैं। ऐसे स्वयं ही मीठा बन जाओ तो सदा ही मुख में मधुर बोल रहेंगे। ऐसे मधुर बोल स्वयं को भी खुश करेंगे, दूसरे को भी खुश करेंगे। इसी विधि से सदा सर्व का मुख मीठा करते रहो, सदा मीठी दृष्टि, मीठा बोल, मीठे कर्म हो।